सुरत निरत

ऋतुराज

पंचशील प्रकाशन, जयपुर

ISBN 81—7056—014—4

प्रथम संस्करण : 1987

मूल्य : पैंतीस रुपये

प्रकाशक
पंचशील प्रकाशन
फिल्म कालोनी, चौड़ा रास्ता
जयपुर-302003

मुद्रक : शांति मुद्रणालय, दिल्ली-32

SURAT NIRAT (Collection of Poems)
by Rituraj Rs. 35.00

हेतु भारद्वाज के लिए

अनुक्रम

लड़की और नाटक

मैं शराब नहीं हूं
किसी नाटक का एक धीमा संवाद हूं
पीने को आग और फिर खेलने को नाटक

मैं जला दूंगी पर्दे
मिटा दूंगी दृश्य
उलट दूंगी मंच
मैं नहीं हूं कोई मूर्ख नशा
जिसे नाटक के बाहर जिंदगी में उतार सको

प्यार से संबोधित करो तो संवाद हूं
नहीं तो वीभत्स

शराब के भीतर नाचता शैतान
नाटक का प्रमुख खलनायक कहता है
नष्ट कर दूंगा मैं कलाकृति,
लड़की की आत्मा को जलाऊंगा
मिटा दूंगा उसके सारे भाव, स्पर्श और संवेदन

कैसे भोगा है युगों से लड़की को समाज ने
कि वह बचने के लिए छिपने लगी कलाकार में!
कैसे चोरी-छिपे किया उसने प्रेम
कि नाटक के भीतर खेलती रही प्रतिनाटक!
कैसे भोग्या के अभिनय के बाद
कैसे अक्षत बची है उसकी आत्मा!!

लड़की खलनायक से पूछती है
वो कौन-सी कलाकृति है
जिसे नष्ट करते वक़्त
जलेंगे नहीं तुम्हारे हाथ ? ?

एक बूढ़ा आदमी अपने बेटे के लिए सेब खरीदते हुए

बार-बार दुनिया के एक फल के पास जाकर
लौटता हूं मैं एक बूढ़ा आदमी
डाक्टर कहते हैं सेब तुम्हें खाना चाहिए

क्या देखने भर से नहीं मिल जाते हैं गुण ?

जैसे वो सुन्दर चेहरा धरती का
नया उत्साह भर जाता है अचानक
देखने भर से जिसे उम्र लगती हो गई कम

मैं एक बूढ़ा आदमी तंग जेब की शून्यता में
उलट-पुलट करता मरुस्थल की रेत
और लोह शक्कर विटामिनयुक्त वो सेब दुनिया का
मेरे लिए वर्जित
मैं एक ईर्ष्यालु निरुपाय चोर
अपने बीमार बेटे के लिए
आंखों से चुराकर ले जाता हूं सारे तत्व·········

"बाप, तुमने व्यर्थ काटे
मेरी मृतप्राय देह के चक्कर
डाक्टर संभाल नहीं सकते चोर दुनिया की
हावी हुई ताक़त को
न भी मिले सेब
मौत का स्पर्श जैसा हो रहे वो लाल

फिर शरीर जैसा सड़कर बिखर जाए
डाक्टर नही कर सकते धरती की फसल आज़ाद
और आदमी तुम्हारे जैसा बाज़ार से गुज़रता
मर गया हो
तो भी डाक्टर लिखते रहेंगे दवा
देते रहेंगे सेब खाने की सलाह"

चीख़

लड़ाई का कुछ भी कारण रहा हो
हमला नहीं हुआ
पर लड़ाई जारी रही

हमने उन्हें झोंपड़ियों से नहीं खदेड़ा
फिर भी वे जंगल की तरफ भाग गए

बार-बार कहा गया कि सब श्रेष्ठ हैं
और रचने की मानवीय ऊर्जा से सम्पन्न
फिर भी रचा गया घटिया और अमानवीय
कहा गया किसी तरह का पक्षपात नहीं होगा
उदारता बरती जाएगी
पर खाली हाथ लौट गए वे
पीटा नहीं गया छुआ तक नहीं गया
पर चमड़ी गायब थी
और आंखों के नीचे सूजन

बिजली का जगह-जगह मंगलाचार था
पर घिरते अंधेरे और धुंध में
पेड़ के नीचे गठरियों की तरह बैठे थे भील
रेल का आरक्षण सुलभ किया गया
पर किसी ट्रक ड्राइवर की शीतलहर के इन्तजार में
बैठे थे वे

चीख़-चीख़ कर कहा गया
जो दिखाई दे रहा है उसे बदलेंगे

बदलने का कोई कारण नहीं था
सिर्फ़ चीख़ना जारी रहा

बुलबुल का बेर खाना

बार-बार उसकी चोंच से
फिसल जाती है पृथ्वी
वह जो गोल-गोल सूखी
भीतर से कीड़ों ने जिसे खा डाला

बार-बार वह गाकर फुदककर
निगल लेना चाहती है पृथ्वी
उसे तोड़-मरोड़ कर
घोषित करना चाहती है जीत

अपने कुछ सपाट और कुछ पेचीदा भ्रमों में
वह समझती है
उसके काबू में आ गई है पृथ्वी

एक छोटे-से बिंदु पर मारती चोंच
वह अभी तक भी परेशान है
क्यों उसके दर्प के आगे झुकती नहीं है पृथ्वी ?

पहाड़ के पीछे पहाड़

पहाड़ की तरफ मुंह करके रोती हूं
जंगल की तरफ एकटक देखती हुई रोती हूं

ओ मां, पथरीली है जमीन तेरे गांव की
बहुत नीचे है पानी
बहुत दुख है दैन्य है
ओ मां, कुछ भी नहीं उपजता वहां
पर मैं उसके लिए छटपटाती हूं

एक दिन मुंह अंधेरे गयी लकड़ियां लेने
सोचा भाग चलूं
चढ़ जाऊं पहाड़
फिर नदी का कछार करूं पार
फिर चढ़ जाऊं पहाड़
दौड़कर ढोक आऊं देवरा
फिर चढ़ जाऊं पहाड़
चलती रहूं चलती चट्टानों पर
पहुंच जाऊं तेरे पास
तू कहती रहे क्यों आयी पगली
क्यों आई हरे-भरे खेतों को छोड़
बता तो क्यों आई हल की मूंठ पकड़े
ओरते बीज
क्यों आई

पर मैं मानूंगी नहीं
पहाड़ के पीछे खड़े हैं पहाड़

तब मैं कहूंगी तेरे यहां ही रहूंगी
सब कुछ सहूंगी सुनूगी
जब तक नीचे से नही आती पुकार

पहाड़ की तरफ देखती
ख़ुश होती
तुझसे कहती रहूगी
अभी तो नहीं
कोई भी नही
जो आने वाला है वह अभी तो नही

महालत*

भरपेट खाए हुए की पीड़ा
दूर करने निकली हूं
देश-देशान्तर में कराहते शुर्रांते
भोजन और चर्वन से आए की
व्याकुलता दूर करने निकली हूं

उसके जबड़े हैं मजबूत
दाढ़ें कटकटाती हैं
मानो सूरज को भी चबा डालेंगी
वह बना चुका है सुरंगें अपनी गुफा में
घसीट चुका है पंजर अफ्रीका के
छिया चुका है मध्यपूर्व एशिया की मज्जाए
खा चुका है लातिन अमरीका की पेशियां
फाड़ चुका है निकारागुआ और नामीबिया को

कितने ही हिरन सांभर नीलगाय और अरना भैंसे
सुनाते है कथा उसके वहुत बड़े पेट की
मुझे इससे क्या मतलव !!
मेरा काम है उसे खुश रखना
और अपना पेट भरना

---

* यानी इंडियन ट्री पाई। यह चिड़िया शेर की दाढ़ों में फंसे मांस के टुकड़े निकालती है। इस तरह शेर को सुकून और उसे भी भोजन मिलता है।

मेरा छोटा-सा पेट
मेरी बारीक पैनी चोंच
दूसरे नहीं उठा पाते हैं यह जोखिम
मुझे इससे क्या मतलब !!

मुझे तो उसकी दाढ़ें मजबूत रखनी हैं
मैं उसे ख़ुश करने निकली हूं

सुन्दर का तो पतझर भी सुन्दर होता है

सूखी टहनी हरी शाख़ से पूछती है,
टूट जाऊं ?
'टूट-टूट कमबख़्त,
क्यों मेरा सौंदर्य बिगाड़ रही है ।'

तड़के उठती है मां
सूखी टहनी के रूप में
अगर चटख़ गई किसी दिन
तो कौन भरेगा पानी, कौन बनाएगा चाय,
कौन लेगा दूध और अख़बार ??
कौन उठेगा सोकर, सुन्दर, अलसाया, ताज़ा ?

मां से तो नही कहती वहू,
तू सोई रह, उठ मत !!

इस हरी शाख के सिर पर
यह कैसा ज़ोम सवार है,
यह कैसा सज-संवरकर हवा मे इतराने का शौक़ है !!
क्या उसने नही देखी है सूखी टहनी के भीतर छिपी ताजगी ?
वह ले जाएगी बहुत सारी हरियाली, सुगंध अपने साथ ।

अरी, जब तेरे खुजली चलेगी
तेरा मन करेगा रगड़ खाने को
तो यही सूखी टहनी काम आएगी !!
जब तेरी भी पत्तियां बदरंग होंगी
तो यही टहनी इन्हें छिपाएगी अपनी बाहों में,
जिस तरह मां ने
ढक ली है वहू की नीद।

विश्वासघात

घिनौना होता है विश्वासघात
किसी दूसरे से कर ले विवाह प्रेमिका
और फिर वेश्या हो जाए

घिनौनी होती है घृणा
उससे जो रहता है सोता जगता है संग-संग
कम चीनी की चाय फटे दूध में···

इच्छा के मरने से पहले
अच्छा हो कि यह मर जाए
ऐसा विश्वासघात ऐसी घृणा

लेकिन इन सबसे ज्यादा घिनौना होता है
किसी क्रांतिकारी का विश्वासघात
जिसे भेजा था दुश्मन के घर सेंध लगाने
पर वह चिनने लगा उसकी दीवारें
दाग़ने लगा गोले हमारी तरफ़

उन्होंने कितने में ख़रीदा होगा उसे
अनुमान तो लगाया जा सकता है
यही कोई "एक बोतल, एक काल गर्ल, विदेशी कैसट
या रंगीन टीवी"······

वह जब नितान्त गृहस्थ था
तुमने तब उसे संभाला क्यों नहीं
उसके बच्चे के जन्मदिन पर नहीं भेजा उपहार

तुमने उसके गोपनीय संवेदनों को महत्व क्यों नहीं दिया ?

आदमी था वह
महज़ सुरक्षित होना चाहता था
अपनी सारी दुर्बलताओं के साथ
वह अपने परिवार को विचार धारा की पथरीली जमीन से
ऊपर ले जाना चाहता था
घिनौना है वह
क्योंकि उसने इतने अच्छे दिमाग़ को
फेंक दिया है घूरे पर

मूड

राष्ट्रीय उद्यान में
उन्हें दिन-दहाड़े देखा प्यार करते
हम ही क्यों वंचित शेष राष्ट्र में

न सुरक्षित उद्यान
और न सहभागी कोई सुख का
न सुख ही किसी सुख का साझीदार
उसमें मिलकर गहरा होता

इससे एक बात सिद्ध हुई—
व्यवस्था चाहे तो ऐसे अवसर जुटा सकती है
किसी भी जगह
और जगह बना सकती है सुरम्य सुरक्षित
व्यवस्था चाहे तो कैकटसों के बीच
कचनार उगा सकती है
और वो इश्कपेंचा की बेल
जिसके नन्हे लाल सितारे प्यारे-प्यारे !!

चुम्बनों की लाड़ियां होती है
व्यवस्था चाहे तो गूंथकर
हमारे गले में पहिना सकती है
व्यवस्था के इस मूड का क्या करें
जिसमें वन्य जीवों और परजीवियों के लिए
सारी सुविधाएं
और योजनाएं हैं
लेकिन हमारे गलते फेफड़ों के वास्ते
कारख़ाने और उनके पास अस्पताल खड़े हैं

कांच

—

एक छोटा-सा भविष्य
गोल प्लास्टिक के फ्रेम में जड़ा कांच
किसी गांव के मेले में ख़रीदा
एक धुंधला, पोंछने पर दीखता मुख-दर्पण

दर्पण भी नहीं सिर्फ़ कांच
सूरज की किरण को विस्तार देता
रंग-बिरंगी धरती के सम्मोहन को
अपनी ज़मीन पर उतारता
एक छोटा-सा कांच

क्या यह ज़िद है
या कोई नाज़ुक महत्वाकांक्षा
साहस है
खून कीचड़ से लथपथ चेहरा देखने का ?
महज एक आशा कभी सुन्दर भी देगा दिखाई
क्योंकि सुन्दर है कांच ?

क्या यह ही हद है जीवन की
ग़ुस्सा कैसा होता है देखने की
चीख़ आंखों से निकली है या गले से

कहीं न कहीं ज़रूर है गफ़लत
कहीं न कहीं हुआ है भ्रम
कांच का मोह
सांच से मुंह मोड़ रहा

एक दिन मुरिया शहर आए

भय और अचरज की काली मिलावट है पुतलियों में
घूमती है पृथ्वी
जंगल इतना परिचित लेकिन शहर
जैसे मंगलग्रह

किससे पूछें कौन-सी बस जाएगी
जहां कट रहा है पहाड़
रेल चलेगी पठार पर
वहां हमने किया प्यार !!

क्यों भाग रहे हैं सबके सब
इतनी रात गये क्यों जाग रहे हैं सब के सब
इतने बरसों से यहां हैं लेकिन एक दूसरे से कटे-कटे
लगता है आज ही कहीं से आए हैं सब के सब
हमारी पहली पीढ़ियों के जो नहीं लौटे गांव दियारा
शायद इन इमारतों के नीचे दबे हैं सब के सब !!

बोल, तू क्या लेगी
इतनी बड़ी हाट
दुकानदार तुझे ही देखें है
बोल, सिनेमा देखेगी कोई
दम घुटेगा तेरा आंखें दर्द करेंगी
कहेंगे हम रेलवाई के हैं
अच्छी-सी सीट दो हवादार !

इतनी बड़ी दुनिया है
लेकिन उबकाई क्यों आती है
क्यों मन करता है पहली ही बस से पहुंच जाऊं पठार

इस हाट में से निकलूं बांसुरी बजाता

चीख़ो नहीं अभागो, एक गीत सुनो ! !

ग़रीब लोग

ग़रीब लोगों की आंखों में दूरबीन लगी होती है
वे दूर से ही देख लेते हैं
कच्चे-पक्के जामुन, खजूर, खिरनियां,
उन्हें दूर से ही पता चल जाता है
कहां हैं सूखी लकड़ियां, गोबर

उनके पेट में धधकता धुंधआता रहता है चूल्हा
जिसमें सिकती हैं रोटियां
उनके गालों में भरे होते हैं प्याज,
उनकी कटी ज़बान लाल मिर्च की तरह
उनकी आंखों में ख़ुशी के आंसू ला देती है

ग़रीब लोगों की आत्माओं से भाप निकलती है
जिससे चलती हैं रेलें दौड़ते हैं स्टीमर,
उनके पसीने से बनता है पेट्रोल,
उनके खून से बनते हैं दुनिया के सारे रंग
उनकी जिजीविषा से दार्शनिकों विचारकों के
गंभीर चेहरों पर दमकता है तेज,
उनके हास-परिहास से जवान होते हैं बूढ़े ऋषि

ग़रीब औरत के पेट में सारे संसार के पाप और पुण्य का
रहस्य छिपा है,
उसके खुरदरे हाथों की सुन्दरता में फलों से लदे वृक्षों की
उदारता है,
ग़रीब लोग अपनी औरतों को कई नामों से पुकारते हैं,
उनकी भाषा में पर्यायवाची शब्द अधिक होते हैं,

सारे ग़रीब लोग कवि होते हैं···

*　　*　　*

तू ग़रीब है
इसका पता तुझे तब चला जब तू रोटी सिकने की
प्रतीक्षा में कोयले की नश्वरता के बारे में सोच रहा था,
तू ग़रीब रहा है,
तूने अपनी टूटी चारपाई की दामन से
बिस्तर बांधकर कड़े पर लटकाया है···??

*　　*　　*

मैं नहीं हूं ग़रीब—
मैंने काटकर अपनी फटी बाहें
कमीज़ का बनाया है बुशर्ट,
बनियान की पट्टी को नीचे से उधेड़
डाला है कच्छे में नाड़ा,
रबड़ की चप्पल में अटकाई है पिन,
मेरे पास चुभोने के लिए यह पिन है,
मैं ग़रीब नहीं हूं······

मजदूर का लड़का ठेकेदार से काम मांगते हुए

किसे कहूं जन्मस्थान मेरा शरीर संस्थान
किसे कहूं अपना घर
किसे कहूं स्कूल खेल का मैदान

आंखें खुली देखा
मां-बाप ने खींची थी धरती पर लंबी गहरी
आकाश छूती रेखा
उन दोनों ने किया था प्यार
गाए थे अनगिनत गीत
हंसे थे चूल्हे की उजास में
सोने की मूरत जैसी मां और काले दमकते लोहे के
सांचे जैसे बाप
उन दोनों में भरा था आत्मविश्वास
उत्साह और प्रसन्नता थी
हौसला था रूखे-सूखे जीवन में से भी
अमृत खींच लेने का ।

< ★ —

मैंने समझा मेरे लिए ही बनाया है उन्होंने यह घर
मेरी ही किलकारियों से गुंजाने
खड़ी की हैं खाली दीवारें
खेलता था मैं रोड़ियों से बनाता था दीवारें
चिनता था पहाड़
मां के लिए एक मंदिर और बाप की चिलम के लिए

एक ताक
मैंने सोचा मैं डाल सकता हूं उनसे भी बड़ी छत
एक दिन ठेकेदार की कमीज पकड़कर बोला—
साहब जी, मुझे भी काम बताओ,
मैं बनाऊंगा घर…मुझे खूब सारे रुपयों की जरूरत है।

ग़लती

वे गन्ना छील रहे हैं
कई बार घिस चुके हैं धार दरांती की
इन खुरदरे हाथों से कई बार।

उनके हाथ जो काटते हैं छीलते हैं
वे मजबूत हाथ जिनकी पकड़ बिल्कुल सख़्त
सिर्फ़ सुस्ताते वक़्त निढाल होते हैं जो।

मालिक आया धमकाने लगा
क्यों निढाल पड़े हैं तुम्हारे हाथ
और दरांतियां सब दूर-दूर ?

मालिक आया धमकाकर चला गया

इन हाथों की ग़लती है
ये गन्ना काट रहे है
ये गन्ना छील रहे हैं।

रेत पर एक बूढ़ा

अपनी चीख़ को रेत में दबा कर
मैंने दिया खामोशी को नया रूप,
सुबह अभी हुई नहीं
शायद लज्जित है मेरे दुःख में सूरज।

टूटी जनतांत्रिक खिड़कियों के पीछे
मैंने रखा खिलता हुआ एक फूल,
मेरे दर्द और भोग से रचा एक शरीर
जिसमें दौड़ती है लय,
लगातार मेरे बूढ़े कान सुनते
पानी के लिए बिलखती आत्माओं का विलाप

मैं गोद में उछालता हूं इसे
कहानी सुनाता खुद सो जाता हूं,
पानी की फुंहार के सपने में किलकता,
किसी काल्पनिक दूब पर तोड़ता
इसके लिए सेव।

इसके सपनों के वास्ते
कितनी ममता है मुझमें ?
कितना दूध है, उल्लास है ?

सैलानी लोग कहते है,
वाह, खूब ! रेत पर यह बूढ़ा
बच्चे को चलना सिखा रहा है ! !

शेर उसके दोनों बैलों को खा गया, उसने शेर को मार दिया

सुवह धौंक वन की आद्र खुशवू
मेरे दरवाज़े पर,
ककोड़े की बेल से नहीं दीखती थी डौली,
मिलते थे हम पलाशों के छितरे आंगन में,
कोई किसी को नहीं सताता था
सब संग्रह करते भरते अपना पेट

राजा तुम थे सबसे शक्तिशाली
अपनी दहाड़ से एलान करते,
जो प्रजा अपनी स्वयं की रक्षा नहीं कर सकती
उसे क्या हक़ है जिंदा रहने का ?

छिपकर ऊंचे चढ़कर भागकर
हम हो चुके थे अभ्यस्त तुम्हारे शासन के
फिर भी तुम कभी नही आए हमारे दरवाज़े
कभी नहीं बैठे बाहर चबूतरे पर

लाला और दीना ने कभी नहीं छेड़ा तुम्हें
कभी नही दखल दिया नींद में,
वे तो सिर्फ़ दो भोले भयभीत कामगार थे
तुम्हारे राज के
अपने परिश्रम और निष्ठा से भर रहे थे
प्रजा का पेट,
उन्हें तुमने मारा,
उन दो कामगारों के पवित्र शरीरों को

तुमने नोचा खाया
राजा जब निरंकुश होता है
तब यही करता है
और हमारे अब तक के इतिहास में
निरंकुश राजाओं को मारा ही गया है
मैंने तुम्हें मारा
उस वक़्त तुम केवल हिंसक पशु थे
न कि राजा,
मैंने सोचा जिस राजा का पेट इतना बड़ा हो जाए
वह प्रजा का करने लगे भक्षण,
फोड़ देना चाहिए उसका पेट,
उसके विरुद्ध हथियार लेकर खड़ा हो जाना चाहिए

मैंने तुम्हें मारा
तब शायद तुमने मेरी आंखों में खुशी के आंसू नहीं देखे,
जानता हूं
एक राजा मरेगा तो दूसरा राजा होगा
लेकिन तुम्हारी इस मौत के बाद
वह जमीन पर फूंक-फूंककर पांव रखेगा

फिलहाल इतना ही काफ़ी है

समय

समय एक गुब्बारा है
हम अपनी बची हुई सांस से फुलाते हैं
फिर हथेलियों से पीटते हैं

जब वह फूटकर टुकड़े-टुकड़े हो जाता है
हम उसकी गोलियां बनाते हैं
दीवार पर मार-मारकर
उन्हें फोड़ते हैं

समय का झीना रंगीन रबड़
और हमारी हांफती सांस
हम जानते हैं
वह उड़ने वाला नहीं
फोड़ सकने वाला एक खिलौना है

हम बिल्कुल क्रूर हिंसक बच्चे
समय को गोदी में बैठाकर
घोटते हैं उसका गला
लेते हैं पूरा बदला
उसकी उड़ नही पाने की मजबूरी का

वह जो हमारे स्वप्नलोक में नहीं जाता
वह जो बिना फुलाए फूलता नहीं

पड़ा रहता जो सुस्त और निर्जीव
वह हमारी छलांग में पीछे रहा फिसड्डी

उसे कुचलकर हम हंसते अचरज करते—
हमारे संसार में आकर भी
वह हमारे जैसा क्यों नहीं हुआ !!

ज़िद

भूरी हरी धरती के बीच
पत्थर हैं टूटे हुए
पर इतने टूटकर भी वे पत्थर ही हैं
कठोर व्यक्तित्व में बने रहने को
ज़िद लिए

ढलान कह दूं इसे
क्योंकि मैं उतरता हूं
और चढ़ाई मेरे इस पर चढ़ने का नाम
नला अदृश्य पानी की गाड़ियों का एकल मार्ग
किसी झाड़ी को लपेटने की वारदात
किसी पथरीले चेहरे को चूमकर भाग जाने की दुर्घटना
किसी भूली-सी पगडंडी को अपने में डुबो देने की ज़िद

यह ज़िद ही तो है
जो टूटी छिन्न-भिन्न होती गति को भी
निरन्तरता कहती
आपस में लड़ते पत्थर कहते संगीत
लचीली टहनियां कहती हम जगह नहीं बदलतीं
यह ज़िद ही है एकान्त
यह गूंज जो चोटी से नीचे उड़कर
छू लेती कदम्ब

पहाड़, तुम्हारी ज़िद में
हवा ने खोल दिए है अपने घोड़े
बांस की खपच्चियों का डेरा लगाए बैठी है गुमसुम

पहाड़, तुम्हारे ऊपर किसी बात का असर नहीं होता
हम रखते हैं छतरी तुम्हारे सिर पर
लेकिन तुम्हारे कई-कई सिर
देखते हैं हमें इस छोटी-सी ज़िद में

उसका स्पर्श

वह पढ़-लिखकर चुनाव करने योग्य होगी
उसे चुना जाएगा और वह भी किसी को चुनेगी
तब तक मैं किसी पानी की गुफ़ा में लीन
उसके इच्छा करने और आदमी पाने से बेख़बर
याद किया जाऊंगा
या शायद बहुत कुछ भुला दिया जाऊंगा

न कोई प्रबल स्मृति लेगी मेरा नाम
उसके विवाह की वर्षगांठ पर
न कोई मेरी बरसी की उसे दिलाएगा याद
बातों में कभी उड़ता हुआ सा गुज़रूंगा···
'अच्छे थे पापा···मगर चिड़चिड़े हो गए थे···
आख़िरी दिनों में···'

उसकी लड़की ढूंढ़ेगी अपने टूटे खिलौनों में
नाना का फोटो
लेकिन कौन बताएगा उसे कि बहुत कुछ रह गया अनखोचा
नाना की ज़िंदगी में
एक निर्जन लंबा रास्ता और वे पसीने से थे लथलथ
दूर दूर तक भी नहीं आया मोड़
और न कोई पहचान का आदमी
कौन कहेगा उन्हें सहज होने में लगे
सिर्फ़ अड़तालिस वर्ष

वह उस आदमी को भरसक समझाने की कोशिश करेगी—

बेवकूफ़ नहीं थे पापा···कविता करते थे तो क्या···
कुछ चीज़ें बहुत बड़ी होती हैं
असफल सिद्ध होने पर भी···
कुछ टूटे शब्द महाकाव्यों से भी ज्यादा होते हैं असरदार···'

कभी कभी उसका हाथ
धूल झाड़ते वक़्त
किसी बंद किताब से छू जाएगा

आपरेशन

डाक्टर उसके शरीर को भीतर से खोज रहे थे
तुमने समझा वह शरीर पच्चीस वरस तक
जो रहा तुम्हारे साथ
उसे तुम जानते रहे डाक्टरों से ज्यादा
लेकिन आज वे उसका तिल-तिल जान गये थे
जिसे वह भी नहीं जानती थी।

इतने परायों के बीच
घिरी पड़ी थी वह औरत
तुम वाहर समय समय पर ख़वर टोहते
उन गुफाओं की जिनमें हो रही थी हिंसा।

वह मौत से जूझ रही थी
जब तुम अपने अज्ञान से लज्जित
तनाव से मुक्त होने की कोशिश कर रहे थे।

बहुत कुछ छिपाती रही वह तुमसे
पर इसका तो उसे भी पता नहीं था
ओंठों के स्वाद और स्तनों की नरम आर्द्रता में
उसने कभी नहीं दिखाया अपना दुख
और तुम इस वक़्त भी उसके दुख के वाहर
थियेटर के दरवाज़े को भेद रहे थे।

जीवन और मौत के बीच

नाच रही होगी उसकी चेतना
डाक्टर कायाकल्प करने जुटे होंगे
और कुछ घंटों बाद तुम्हें सौंप देंगे वह शरीर

जिस तरह पच्चीस बरस पहले
एक बूढ़े ने तुम्हें बुलाकर कहा था
इसे ले जाओ अपने साथ···यह तुम्हारी है।

हाथ

मेरे हाथों में बीज
तेरे हाथों में बीज
लेकिन वे हमें थोड़ी-सी भी जमीन नहीं देंगे

तेरे हाथों में थोड़ी-सी जमीन हो
और मेरे पास कुछ पानी
हमारे बच्चों के पास हों बीज
लेकिन वे इस सबके लिए
हमें थोड़ी-सी भी जमीन नहीं देंगे

अब वे पहले जैसे हाथ कहां
पहले जैसी हरकत कहां इनमें
पहले जैसी आंखें कहां

तेरे हाथ मेरे साथों में
अब दो कैदियों जैसे हथकड़ियों के घाव सहला रहे
तेरे मेरे हाथ मिलकर
दो सूखी जड़ें जिन्होने दिया सारा जीवन

मेरे हाथ के खुरदरे गढ्ढों में
तेरे हाथ के गर्म पिघलते-से स्पर्श
जैसे कड़ाही की तलछट में आलू के भुने रेशे
मेरे जलेपन को तेरे हाथो में लेकर
क्या बदल सकेगी यह स्वाद
तेरे भुने सूखे हाथों को अपने तिक्त ओंठों से लगा
फैला दूंगा मैं आग ? ?

इन चीजों को किसी तीसरे आदमी को दे दें ?

जिसके हाथ हमारे जैसे हों
लेकिन जमीन हो जिसके पास

जिसने अपने हाथों से छीनने लूटने का काम लिया हो ? ??

झोंपड़ी

पहाड़ की चोटी पर बनी झोंपड़ी
बुलाती है मुझे
चट्टानी ऊंचाइयां और उनसे भी ऊपर
आदमी का क़द
मोहता है मुझे

जिसने रखे होंगे पत्थर पर पत्थर
और बांधे होंगे बांस
जिसने भी तोड़ तोड़ कर चट्टानें
बनाया होगा आंगन
वह क्या नहीं करता होगा
ज़िंदगी को बेहद प्यार

ऊपर उठकर नया देखना नया रचना
चाहता होगा वह
लेकिन मैं क्यों खिंचा जा रहा हूं उस तरफ़
गलियों में कराहते बुड्ढों को छोड़
जिनके बेटे चले गये बाहर कम्प्यूटर से कुछ मांगने

गलियों में मैला ढोती हरिजन स्त्रियों से कन्नी काटता
मेरे भीतर किसी कामुक ब्राह्मण की आत्मा
स्पर्श और अस्पर्श के बीच यंत्रणा भोगती

गलियों में रीते घड़े लिए खड़ी हैं लड़कियां
पेटीकोट के ऊपर कुर्ते पहिने
कभी मटमैली धोतियों में खड़ी मिलेंगी इसी तरह

एक धुंध छाया है मेरी आंखों में
मेरे पांव चारपाई की दामन में उलझकर रह गये हैं
लेकिन वह झोंपड़ी लगातार बुलाए जा रही है

आदमी जो नीचे खोह में
बांस लेने गया है
लौटने पर सोचेगा
उसका पानी किसने पिया
आंगन में लकड़ियां सुलगाकर
कौन भाग गया ? ?

एक आदिवासी पेड़ से गिरकर मर जाता है

आकाश किसी एक का था
धरती किसी दूसरे की
बीच में था पेड़ मेरे शरीर का झूला

तब मैं न आकाश से डरा न धरती से
प्यार करता रहा धरती को
जरा से पानी से महक उठती थी वह
प्यार करता रहा आकाश को
जो थामे रहता अनगिनत रंग
लेकिन धरती नित्य नये रंगों से चिढ़ाती थी
आकाश को
कितना अचरज था मुझे इन दोनों की कला पर

कितना मजा था कोने में गर्दन हिलाते फूल को थामने में
आम के सर में घुमड़ती धुनें सुनने में
किसी घोंसले में नन्ही चोंच को सीटी बजाकर डराने में
या सभा भवन से व्यस्त निकलती चींटियों को छेड़ने में…

इन सबके बीच लटका था मैं
देवताओं की निरंकुशता का मजाक उड़ाता
फल तोड़ता रस की नदी बहाता
मेरे जीवन की वह नदी एक जगह थमकर बहती थी चुपचाप

अचानक एक दिन आकाश ने फेंक दिया नीचे
पेड़ नाचा वीभत्स—" ले, तुझे मैंने फेंक दिया धरती पर
जिसे तू करने लगा आकाश से ज्यादा प्यार
लौटा दिया तुझे निचोड़ कर रस
आकाश ने छापा तेरा नाम और हवा ने पत्तियों के बीच
की साजिश…"

मैंने पेड़ को चिढ़ाते हुए कहा—
"औंधे मुंह गिरकर समा गया हूं धरती में
जिसके रंगों को करता रहा प्यार
और जिसका एक रंग लाल
केवल मेरे ही खून से बना निशान वह
देख, मैंने ही बुझाई है इस धरती की प्यास…"

मकड़ी

उसके प्यार में पड़ने का अर्थ है मौत
ऐसा जहरीला बारीक कमीज पहिनायेगी वह
बिल्कुल बुलटप्रूफ़ का उल्टा
कि तड़फोगे बच्चू और करोगे उसके चुम्बन का इन्तजार

मौत की कारीगरी कितनी मोहक हो सकती है !!
उसकी क़सीदाकारी में घुटती है तुम्हारी सांस !!
लम्बी सुतंवा उंगलियां उसकी और आश्वस्त अधमुंदी आंख,
वह दूर से ही देख लेती है तुम्हें
आजादी के लिए छटपटाते,
दूर से ही फांस लेती है अपने मोह में
अपनी कला की श्रेष्ठता साबित करती
कि कला वही श्रेष्ठ जो फंसा ले जीवन को

आखिर, इतनी सृजनात्मकता के बाद
सम्मोहन नहीं हो तो सब व्यर्थ है,
इतने भरोसेमंद कौशल के बाद जीतता ही है कलाकार,
उसका हक़ है कि उसे भोजन मिलना चाहिए,
स्वादिष्ट व्यंजन होंने चाहिए उसके लिए,
उसे मिलना ही चाहिए झीने रेशमी कपड़े में लिपटा उपहार

कला आखिर कला होती है
अच्छे अच्छों के पर कतरकर
उन्हें अपनी गिरफ़्त में ले लेती है

तिलचट्टे

वे सबके सब रात में भाग-दौड़ करने लगे
चौकीदार बाहर लगातार बजा रहा है सीटियां
चोर है क्या भीतर
कहीं आलमारी सरकाने की आवाज़ तो नहीं ??

चौकीदार नहीं जानता
सैकड़ों चोर दीवार पर चढ़कर धन तलाश रहे हैं
दावतें उड़ रही हैं
किताबें पढ़ी जा रही हैं
चोरी से सोफे पर किया जा रहा है प्यार—
"तू जितनी फुर्ती करेगी दूर खिसकने में
उतनी ही फुर्ती से लपकूंगा तेरी तरफ़…"

आधी रात और दिनभर की खोदी सुरंग में
ग़फ़लत और ग़लतफ़हमी नींद की
मुझे जकड़ लिया है भयानक सपनों की हथकड़ियों ने
मैं पड़ा हूं अचेत इन चोरों के घर में
इनके साम्राज्य में एक बेजान मनुष्य

लगता है,
हमने बांट लिए हैं काम—
दिन में मैं चलूंगा, घिसटूंगा इस घर में
और रात होने पर ये दौड़ेंगे, नाचेंगे

चलो, रात में तो कुछ माहौल बदला इस घर का

सैरीग्राफ़

धरती के ऊपर
उड़ती एक चिड़िया
बेचैन एक काया
सकल ब्रह्मांड में

बैठने की ढांव नहीं
छिपने को छांव नहीं
उडती वह उड़ती चिड़िया
पंखों को तनिक दे सकूं आराम
टांगों को कर सकू सीधा
गर्दन को सहलाऊं चोंच से
घर हो एक जहां दौड़ू गाऊं
मैं चिड़िया धरती पर उतरूं
मेरी यह छोटी-सी इच्छा

नीली खोली के तकिये पर उसके लिए
कहां नींद
भूरी हरी छींट की चादर पर बेफिक्र पसर जाने की
कहां उसे उम्मीद
वह अकेली व्याकुल
उड़ रही हवा के प्रतिकूल
एक बांझ स्त्री बच्चों के कोलाहल
उत्सव में भटक रही
व्याकुल वह व्याकुल चिड़िया

जूंएं

रेल डिब्बे में लेटी हुईं वे तीन औरतें
वे तीन औरतें
"शाब हमसे बोला, तुम्हारे देस में शाला
सब काला ही काला होता है…"

फ़र्श पर नींद में ग़ाफ़िल वे तीन औरतें
सोती हुई बिल्कुल अस्तव्यस्त निढाल
और उनके चीकट बालों में
जगती हुई असंख्य जूंएं

जूंओं, तुम ग़रीब, कंगालों को कितना प्यार करती हो,
उनकी घटाटोप आत्माओं की बेचैन धड़कनें बनकर
जगती हो उनके सिरों में
शायद इसी कृतज्ञतावश वे तुम्हें मुम्बई ले जा रही हैं

हो सकता है कहीं अधबीच में ही
किसी छोटे से स्टेशन पर
उन्हें नजर आएं उन जैसी ही ठठरियां
धूप सेंकती हुईं
तब शायद वे तीनों उतर पड़ें

देशाटन के इस उनमुक्त कार्यक्रम में
वे औरतें नहीं देखेंगी ऐतिहासिक क़िले
और राजधानियां,

सैरीग्राफ़

धरती के ऊपर
उड़ती एक चिड़िया
बेचैन एक काया
सकल ब्रह्मांड में

बैठने की ठांव नहीं
छिपने को छांव नहीं
उड़ती वह उड़ती चिड़िया
पंखों को तनिक दे सकूं आराम
टांगों को कर सकूं सीधा
गर्दन को सहलाऊं चोंच से
घर हो एक जहां दौड़ूं गाऊं
मैं चिड़िया धरती पर उतरूं
मेरी यह छोटी-सी इच्छा

नीली खोली के तकिये पर उसके लिए
कहां नींद
भूरी हरी छींट की चादर पर बेफ़िक्र पसर जाने की
कहां उसे उम्मीद
वह अकेली व्याकुल
उड़ रही हवा के प्रतिकूल
एक बांझ स्त्री बच्चों के कोलाहल
उत्सव में भटक रही
व्याकुल वह व्याकुल चिड़िया

जूंएं

रेल डिब्बे में लेटी हुईं वे तीन औरतें
वे तीन औरतें
"शाब हमसे बोला, तुम्हारे देस में शाला
सब काला ही काला होता है..."

फ़र्श पर नींद में ग़ाफ़िल वे तीन औरतें
सोती हुई बिल्कुल अस्तव्यस्त निढाल
और उनके चीकट बालों में
जगती हुई असंख्य जूंएं

जूंओं, तुम गरीब, कंगालों को कितना प्यार करती हो,
उनकी घटाटोप आत्माओं की बेचैन धड़कनें बनकर
जगती हो उनके सिरों में
शायद इसी कृतज्ञतावश वे तुम्हें मुम्बई ले जा रही हैं

हो सकता है कहीं अधबीच में ही
किसी छोटे से स्टेशन पर
उन्हें नजर आएं उन जैसी ही ठठरियां
धूप सेंकती हुईं
तब शायद वे तीनों उतर पड़ें

देशाटन के इस उनमुक्त कार्यक्रम में
वे औरतें नहीं देखेंगी ऐतिहासिक क़िले
और राजधानियां,

सुपर बाजार और राष्ट्रीय पक्षी विहार,

दरअसल, वे तीन औरतें
इन ढेर सारी जीवात्माओं के साथ
सर्दी से बचती हुई भटक रही हैं…

घाट पर

दोनों प्रसन्नता की खोज में
ले आए ढेर सारे मैले कपड़े

यह क्या कम बड़ी बात है
उन्हें नहीं खोजना पड़ता पानी
वे सिर्फ़ उसके पास पहुंचते हैं
और फैला देते हैं अपनी थकान

पानी का स्पर्श शीतल होता है
खड़े होकर लगता है
लिपटे हैं दो तन शून्य में
और शून्य अपने ममत्व से
भर रहा संगीत जिनमें

लेकिन पानी तो रोटियां पाने का एक ज़रिया है
बहुत कठिन है जिसकी गहरी डूबती यात्रा
बहुत कठिन है निचोड़ना जिसमें मैल
इस शहर का
धोने पाप पोंछने दाग़
बहुत कठिन है नंगे को सजाना स्वच्छता से

अभी भी बहुत-सा मैल वंचित रह गया
पानी के स्पर्श से
वे दोनों घर लौटते हुए सोचते हैं
शायद मिलेगा वह
जो इस बार लाने से रह गया

क्या कुछ कविता बचेगी

रफ़्तार ने धक्का दिया
तुम कुछ आगे बढ़ गये
फिर एक ज़ोर का धक्का आया
रास्ते से दूर कंटीले तारों के बाड़े में फिंक गये
आघातजीवा अल्परक्तता से ग्रस्त
माचिस की तीली की तरह घिसे जाने के इन्तजार में

आयी फिर धूप आयी तपिश
फ़र्श पर सिकुड़ते बुढ़ापे की
भरता गया समय प्यासी मिट्टी में जैसे पानी

एक अदृश्य भय आंखों पर था सवार
अचानक फट पड़ेगी जमीन
होगी अचानक अल्टा वायलट किरणों की बौछार
धुआं भर जायेगा फेफड़ों की संधों में
शब्द नहीं देंगे दिखाई
प्रिय खिलते कचनार हो जायेंगे निर्जीव
नहीं बचेगा अधरामृत
न मा न भर्ता न प्यार
ऐसे ही सब प्रत्यय टूट-टूटकर बिखर जायेंगे
जमीन फिर कभी नहीं सियेगी अपनी खोली

क्या अभी तक पानी है इतना मीठा ?
क्या अभी तक इच्छा है लगती रहे प्यास ?

क्यों भाग रहे थे असंख्य लोग ?
क्यों नहीं तय सुन्दर रहा शहर ?
रोशनी भरा हीरक जड़ा ताल

कंठ सूख गया चटख़ गयी अतृप्त भूखी देह
फट पड़ा था ज्वालामुखी आतंक का
न कोई राजनीति न चेतना
सिर्फ़ प्राणरक्षा छोटे छोटे दैत्यों द्वारा बनाये
इस दानव से
क्यों दौड़ते हुए बिछड़ गये थे पिता ?

झूठ है सपना जो वे दिखाते रहे
झूठ है बढ़ना
क्योंकि तुम गिरते रहे लगातार
झूठ है सुरक्षा का उपाय
गोली भी नहीं चली पर तुम मारे गये
बुढ़ापे की ठिठुरन में लाचार
या निर्लज्ज कमीनी हरकतों के शिकार
तुमने यथाशक्ति भागने की कोशिश की
सड़क थी घुमावदार चोटी थी दूर
जहां सोये हुए थे कुछ भाग्यशाली लोग
झूठ थी नींद गहरी उनकी
जब चीखता था पूरा शहर

झूठ था नया जिसे पुराने मजबूत हाथों ने बनाया
सब कुछ झूठ था सिवाय तुम्हारी मौत के

सूरज को घेरकर मारेंगे वे
दस लाख मेगाटन से
न लेंगे सांस खुद न लेने देंगे
तब क्या कुछ बचेगा ?
क्या कुछ कविता बचेगी तब

अगर थोड़ी-सी भी होगी तो दुनिया फिर से रच लेगी ?
क्या तुम बचोगी एक बार
इस कविता के लिये ?

लेकिन तुम हो कौन ?

शिखर वार्ता

मुखिया :

अगर युद्ध हुआ
और अणुबम का भारी विकीरण
फैला वायुमण्डल में
तब क्या बनेगा तुम्हारी कविता के मांस का ?
बहुत-सी कविताओं की खाल जलेगी
और जलकर चिपक जायेगी तुम्हारी खाल से
जैसे चिपकता है बीमार बच्चा मा के सूखे स्तनों से
जलेगा यह विचार तक कि अकारण मिली
यह मौत···

कोरस :

वो शक्तिसम्पन्न लोग
वो दो तीन नाभकीय धुरंधर लोग
बातें ही कर रहे थे सदाशयता में
और हम सोच रहे थे कि कुछ ही दिनों में
भरने लगेगा पेट,
कपड़ा मिलें अच्छे रंगबिरंगे वस्त्र देंगी,
पहाड़ के नीचे एक विराट स्थापत्य
घर की शक्ल में करेगा प्रेम

हम अपनी सूखी खनखनाती हड्डियों में
पूर्वजों की सुगंध लिये,
हम अधुनातन ध्वन्यालोक में आनन्दित,
कला के चमकीले वायुमण्डल में फरफराते,

हम संस्कृतियों के परस्पर हास-विलास में
किसी समुद्र की रेती पर आदिम सत्य जैसे नग्न,
हम मिठाई भरे डिब्बों को सावधानी से थामे
खड़े अगली सदी के बस-स्टाप पर··

मुखिया : अगर विस्फोट हुआ
और धुएं का गोला
किसी मरे हुए दुश्मन के भूत जैसा
बढ़कर छाया सिर पर
अगर काली बरसात बरसाती रही
तब क्या बनेगा तुम्हारी कविता के मांस का ?

कवि लोग

कवि लोग बहुत लम्बी उमर जीते हैं
मारे जा रहे होते हैं
फिर भी जीते हैं

कृतघ्न समय में मूर्खों और लम्पटों के साथ
निभाते अपनी दोस्ती
उनके हाथों में ठूंसते अपनी किताब
कवि लोग बहुत दिनों तक हंसते हैं
चीख़ते हैं और चुप रहते हैं
लेकिन मरते नहीं हैं कमबख़्त

कवि लोग बच्चों में चिड़ियाएं
और चिड़ियाओं में लड़कियां
और लड़कियों में फूल देखते हैं
सब देखे हुए के बीज समेटते हैं
फिर ख़ुद को उन बीजों के साथ बोते हैं

कवि लोग बीजों की तरह छिपकर
नये रूप में लौट आते हैं

फिलहाल उनकी नस्ल को कोई ख़तरा नहीं है

नींद

गहराई में उतर चुके हो
तो नींद के बारे में कहो।

अब ठंडी समतल चट्टान पर
फुदकने की जरूरत नहीं,
धीरे धीरे पी जाओ अंधेरे को
और ओढ़लो काली छत सिर पर,
धीरे से कहो अंतरंग
और आंखों में बंद कर लो छवि
खिड़की से आती हवा को बगल में लिटाए
सुनाओ कविता।

नीद प्रेम का क्लासिक संस्करण है,
डी-लक्स मॉडल है हवा और चुप्पी का,
अंधेरे में सुरत निरत की अभेदता है,

आ, मधुरतम लय, मुझे अपने वक्ष पर स्खलित कर दे!!

किसने सोचा था विचारों के पहाड़ी झरने
व्यर्थ मचाते रहेंगे शोर,
आलिंगन होगा बहुत पथरीला
और खरौंचों भरा,
खतरनाक मोड़ जीवन के कहेंगे

कायर हो तुम,
अच्छा नहीं लगता तुम्हारा पीछे हटना,
ठंडी सांसों का भीतर-भीतर घुटना,
किसने सोचा था मौत की इस दुर्गम घाटी में
खिलेंगे नीले कचनार,
एक एक कर झरेंगे छंद
और सपने तल में घसीट कर ले जायेंगे

आ, अद्भुत निष्क्रियता की मधुरतम गति,
मुझे अपनी आंखों की सीपियों में मोती-सा छिप जाने दे !!

धूप से अनार तक

धूप कौन पसन्द करता है ?
जिसे धूप मिलती है।

दूर दूर तक इस गली में नहीं है धूप,
बच्चे स्कूल जा रहे हैं।

कौन पसन्द करता है सर्दी में नहाना ?
कहीं भी तो नहीं है पानी, कोयला,
बच्चे स्कूल जा रहे हैं।

नंगे पांव चलना कौन पसन्द करता है ?
कांटे हैं पर जूते नही हैं,
जूते बना कर सजाये हैं कांटों के ऊपर,
बच्चे स्कूल जा रहे हैं।

कौन पसन्द करता है अनार ?
उच्च वर्ग की तरह खून से छका है अनार,
थोड़ी-सी भींच में त्राहि त्राहि करता,
पास से गुज़र जाता है बीमार
कीमत पूछकर मरना नहीं चाहता,
बच्चे स्कूल जा रहे हैं।

एक लड़की अपने अधेड़ प्रेमी को आश्वस्त करती हुई

तुम्हारी धुंधली जलती आंखों में
पीछे लौट नहीं सकने की मजबूरी है
पर आओ मैं तुम्हें ठंडे पानी की तरंगों में
उछलती मछली दूंगी

छज्जे पर खड़े होकर
देखती हूं आकाश वो रंग-बिरंगा
तुम भूल जाओ सफेद पके बालों का
सेई के कांटों जैसा छितरा जाना
मैं तुम्हें घर छोड़ सकने के लिये
कुछ सच दूंगी कि अभी तुम भी हो मेरे जैसे

एक अधेड़ के लिये भूल गयी हूं कच्ची जामुनें
भूल गयी हूं पिछले दिनों के जड़ टूटे लम्बे लेटे खजूर
मैं अपनी बांहों में तुम्हें झुला कर
आज़ाद कर दूंगी आवागमन के चक्कर से

° ° °

लेकिन यह कौन हड्डियों की माला गले में लटकाए
गुस्सैल लाल आंखें निकाले झपटने को है मुझ पर
टूटता है साहस और तुम कुछ नहीं बोलते
यह घसीटती है तुम्हें खिड़की से
नोच डालती है तुम्हारे जवाकुसुम
तुम्हारी आंखों के हरसिंगार

क्षण में जाते सूख

तुम्हें जब देखा था पहली बार
कहां छिपी थी यह तुम्हारी अनिवार्य छाया
देखा किस तरह इसके नाखूनों में तुम्हारी झुर्रीदार त्वचा
लच्छी बनकर सिमट गयी है……

अंधे की बीवी का रोमांस

आंखें देखती नहीं हैं फिर भी एक सपना है
कल्पना में रंग-बिरंगे पंखोंवाली चिड़िया का नाचना
और नाचते हुए चलना
कल्पना में कमर के नीचे अलस झूलती मेखला
और गजगामिनी का पास आना

मैंने दूरी का अनुमान खुशबू से लगाया है
और स्पर्श से बनाई है एक माधवी लता

बैठो इस लम्बे ढलते समय में पास
करो बातें गूढ़
मुझे हवा दो और लगाने दो आवाज़
अब समय जल्दी आया वसंत है

देख नहीं रहा हूं मुस्कान
न कनखियों से दरवाज़े के बाहर देखने का भाव
समझ रहा हूं तुम्हारी आंखों को
सिर्फ ध्वनियों से पकड़ रहा हूं पंख
तुम्हारी खुली चोटी सुबह की फुंहार में

° ° °

कहां हो तुम ? यह कौन भारी पत्थर की तरह रोके सांस ?
क्या मैं नितांत अकेला नहीं हूं ?
किसने छुई हैं किताबें ?
कौन मेज़ तक जाकर लौट गया दरवाज़े पर ?
मुझे अचानक इस संदेह में दिखाई देने लगा है दूर दूर तक

तुम जा रही हो आख़िरकार आंखों के आकर्षण से खिंची···

° ° °

मैं दूर-दूर तक देख रहा हूं
इन आंखों से जिन्हें तुमने कभी नहीं देखा
देखते हुए इतनी दूर तक साफ़···साफ़।

चौखट के पार

वे मुझे अपनी चौखट में फिट करते रहे
रन्दा मारते ठोकते रहे कीलें
फ्रेम पर जड़ते रहे फ्रेम
फिर भी मैं रहा सूखा का सूखा

शाम को बाहर रोकता
भीतर रात हो चुकी
तू अब आयी
भीतर बुढ़ापे और मौत की कशमकश में
बज रहा है हारमोनियम
तू अब आयी
जबकि मैं धड़क रहा जीवन को चिपकाए
इस देह से

सड़क पर निकली होगी हंसनी
चांदनी की मध्य लय में सरसराती
मेरी आंखों में मिल रहे शुक्र और मंगल
तू अब आयी

दूर तक पहाड़ पर बनायी रेखा
लांघा जिसे मैंने कई बार
पानी की खोज में आदिकाल से
एक आदमी मुझमें चढ़ता रहा
उतरता रहा
तू अब आयी
जबकि मैं ढेर सारे पानी के आगे बैठा
देख रहा
अपना झुलसा हुआ चेहरा

रुको सूर्यास्त

इस तरह देखा मैंने मेरा सूर्यास्त
लाल ओठों का ओझल चुम्बन
और सुनहरी आंखों में से उड़ते
दो नीले सफ़ेद सारस

कहीं ऐसा न हो कि मैं खो दूं
अब तक छिपाकर रखे शब्द
बेशकीमती पत्थर ये
पारखी कहेंगे मैंने अपने ही बचाव में
सिर पर जड़े पत्थर ये बेशकीमती

फिर फिर भटक कर आयेगी ऋतु
एक सहनशील सन्नाटा ऊंचाई से फिसलेगा
इतने वर्ष लगे क्यों पहचानने में
पतझर से गिरी एक पत्ती
जिसकी कमजोर नसों में बसी थी गंध
और वह अपनी निर्जीव देह छोड़कर
हवा को नचाती रही शैतान

क्या मैंने इस सिमटते तंतुजाल के बीच
उस पत्ती की ही तरह
फंसाया है कोई सपना ?

क्या मैं इस सूर्यास्त को प्यार से
कहने लगा हूं—
रुको, इतनी जल्दी मत करो···?

उड़ान

कितनी बार देखा
भयानक सपना
कितनी बार खूंख़ार दैत्य के जवड़े में
चला गया साबुत
कितनी बार भागा जीवन के लिए
किसी झाड़ी की कोख में छिपने ?

तू चिकित्सक की मुस्कान नहीं
जो हरे मेरी पीड़ा,
तू पारदर्शी नीले आवरण में
चमकता नक्षत्र भी नहीं
जो दिखाए रोशनी अंधेरी पगडंडी पर,
तू मेरे अदृश्य सुख की सिर्फ़ एक सम्भावना
जिसे मैंने बार-बार खारिज किया।

किसी अभिजात मंडप के नशीले और आत्ममुग्ध
शोर में
मैं चुपचाप खड़ा देखता रहा अपने बचाव की गलियां,
जिन गलियों में हांफते हैं कई परिवार,
बचाव का सुगम रास्ता जिनके लिए
सिनेमा होता है या अख़बार,
मैं एक धधकती खान में धंसता हुआ भी
काटता था पहाड़,
पीछे धकेलता था उसे
जो समतल जमीन का भ्रम था
और वो जो बरसात में हो जाता था खाई।

इसी बीच बहुत से मदमस्त लोग
बना चुके थे भव्य महल पहाड़ पर,
जिसे मैं खोदे जा रहा था,
वे नक्षत्रों के बिल्कुल करीब पहुंच चुके थे
और मैं पृथ्वी के तल में छिपा
समुद्र की ओर बढ़ रहा था,
हिला रहा था उनकी नींवें।

इतना श्रम करने के बाद
एक दिन अचानक मिल गए मुझे पंख
और मैंने देखा मैं उड़ रहा हूं
झपट्टा मारता
ऊपर के लोगों को खाई में गिराता।

मणि

खोजी उदास हो गया
पिछली उपलब्धि ही बची
आंखें थक गयीं
पांव सो गये
बंद हो गया रक्तसंचार

हंसे उसके शत्रु
क्या जरूरत थी खोजने की
क्या पड़ी थी नक्शा बांचने की
चाभी पड़ी होगी कहीं झाड़ियों में
धंसे हुए कुएं की पट्टियों के नीचे
रहता है जहां इच्छाओं का नाग
असमय बरसात से भूखा, क्षुब्ध
नहीं लगाने देता हाथ
किसी भी पत्थर को
नहीं हटाने देता मलवा युगों का

अचानक खोजी की बूढ़ी आंखों में चमक उठी
आशा
छीननी नहीं पड़ेगी मणि
न मारना पड़ेगा नाग
एक औरत लायी है दूध
गाती मधुर गीत
वह इतनी सुन्दर है कि मोहित हो गया है नाग
फण से चूमना चाहता है उसके पांव

विष को विष द्वारा मरते हुए
देखता है खोजी

लेकिन औरत के मरने के बाद
ग्लानि होती है उसे···
अब मणि लेकर क्या करेगा वह !!!

लड़कियां

वे पीछे नहीं देखती हैं
कोई खिड़की अधखुली रह भी गयी हो
तो लगा देती हैं तख़्ते,
गिर गया हो एक फूल झोली से,
हवा के साथ उड़कर पीछे चला आया हो
कोई तिनका,
तब वे तेज़ क़दमों से चलने लग जाती हैं

गुज़रे हुए से मुक्त होना
उनके लिए कितना सहज है
जैसे बदलना दूसरा कुर्त्ता, फेंक देना टूटा कंघा,
जैसे उतारना आत्मा पर से
कोई अनचाहा छिलका

उन्हें ऐसा करते वक़्त नहीं लगता
पर उनमें खुद को ज़िंदा रखने के लिए
हम दौड़ते हैं
और अगली गली में उनके आने की प्रतीक्षा करते हैं

18 अक्टूबर, 1985

वे न तो कविता की जन परम्परा ख़त्म कर सकते हैं
और न ही महान कवियों की पीढ़ियों को,
वे कवि को आख़िरी दम तक नहीं समझ सकते
लेकिन हर वक़्त उसकी कविता से भयभीत रहते हैं

वे भले ही वोथा हों, खुमैनी हों, जिया हों,
कविता का अपना रंग बिल्कुल अलग होता है
और इस रंग को मिटाने की कोशिश में
गाढ़ी और पक्की होती है कविता

मोलाइस कविता का स्वतंत्र देश है,
गोरों की छाती पर एक शक्तिशाली प्रहार वह
उन्हीं के फंदे में उन्हें लपेटता घोटता,
वह दिखाई दिया है हैली पुच्छलतारा

कविता-पृथ्वी के वायुमण्डल में कायर और पिलपिले
कवियों को अपने प्रकाशपथ पर बुलाता···
मोलाइस को देखो, वह अंत तक, टूटकर गिरने से पहले
मा अफ्रीका की आंखों में खुशी के आंसू देखना चाहता है

मोलाइस को समझो,
उसे मारने का कारण उसकी कविता है,
हथियार से हथियार टकराता है मोलाइस
कविता के नाभकीय युद्ध मे साधारण आदमी की तरह
मरता है मोलाइस

खुशी और आवेश में कहता है मोलाइस

कविता बहुत कुछ कर सकती है,
एक दिन कवि के पीछे चलेंगे देश
मोलाइस कहता है
कविता बहुत कुछ कर सकती है

बोझ

भारी है उनका दिमाग़
तेज़ रखना चाहते हैं मेरी चाल

जिन किताबों को उन्होंने बेच दिया
कबाड़ी बाजार में पहली लड़ाई के बाद
उनसे मुझे बनाना चाहते हैं आदमी

भारी है मेरे कंधे का बोझ
गुरु चाहते हैं किंचित भी अछूता न रहे ज्ञान का भंडार
और पिता कहते हैं सब कुछ इतनी जल्दी ख़रीदा
नहीं जा सकता
महंगी हो गई हैं किताबें
लेकिन अच्छे बच्चे बस्ता भरा हुआ लेकर चलते हैं

जंगली हाथी की कहानी
अथवा सम्राट चंद्रगुप्त
प्यासे कौवे की बुद्धिमत्ता अथवा पृथ्वीराज का छलबल
मोहनजोदड़ो की व्यवस्था
अथवा डांडी यात्रा
सब कुछ ही तो अच्छे बच्चे सीखते हैं
लटकाते है भूत और भविष्य अपने कंधों पर
झूलते हैं विश्वास और जिज्ञासा के बीच
चीख़ते हैं ख़ुशी से
और ढोते हैं गर्व से

बहुत बड़ी दुनिया का तत्त्व ज्ञान
जिसे बूढ़े नही ढो सकते इतनी शान से।

स्कूल

एक

बड़ों ने कहा समय प्रतिकूल है
स्कूल जाना फ़ुजूल है

प्यारा घर छोड़कर कौन जाता है बाहर
किताबें घरों में बंद हो गयी हैं
अच्छे स्कूल तो जिंदगी की किताब से शुरू करते हैं

गली के मोड़ पर बीड़ी का कारखाना था
जिसमें काम करते थे बच्चे
इस छोटी-सी आयु में
इससे बड़ा स्कूल नहीं था शहर में

चूने के भट्टे के पास तोड़ते रहे पत्थर
भौतिक शास्त्र की प्रारम्भिक शिक्षा
वहां से ही शुरू हुई

दिखाई देने लगा डोरा छेद के आरपार
बटन टांकते रहे बच्चे
दर्जी की दुकानें अनगिनत पाठशालाएं थीं
बच्चों के लिए
कमीज़ बनाने की तमीज़
इस शहर में पहले से ही मौजूद थी

दो

घर एक स्कूल है
हमें डालनी है छत
विछानी हैं टाट-पट्टियां

मेरा दिमाग़ एक काला तख़्ता है
लिखना है जिस पर प्यार,
वारिश तूफ़ान में हिलता है घर
गिरती है विजली स्कूल पर
विना खिड़की सलाखों के घुसता है पानी

मैंने कितने ही घर वदले
कितने ही स्कूलों मे पढ़ा मैं
उनमें से कितने ही अव तक ढह चुके
लेकिन पढ़ता रहा मैं उनके विना भी

घर के स्कूल में वाग़ होना चाहिए,
हम देखेंगे फूल सींचेंगे क्यारियां
ठंडा करने को गुस्सा,
घर के स्कूल में अजनवी वनकर
किसी दीवार पर करूंगा हस्ताक्षर

मैंने अभी पढ़ाई ख़त्म नहीं की है,
घर में हेडमास्टर वना
छड़ी हाथ में लिए घूमता हूं,
मेरी हथेलियां अव तक भी लाल हैं

तीन

रंग भर रहे थे स्कूल में
चिड़िया की चोंच लाल थी
पंख हल्के नीले पूंछ सलेटी
लेकिन ऐसी तो चिड़िया इधर नहीं दीखी

घरों पर पुताई करने वाले लड़कों ने
काल्पनिक चिड़िया बनाकर उड़ा दी
और अपना काम ख़त्म कर चले गए

कई दिनों तक चमड़ी सफ़ेद, लाल, नीली, सलेटी रही
जैसेकि जल रंगों से बनी चिड़िया
डूब गयी हो काले पोखर में

घर के स्कूल में इन कलाकार लड़कों ने
पिकासो को देखा···
दूसरा कोई नही
उनमें से एक लड़का
जिसे चिड़िया से चीख़ निकलवाना आता था

एक शराबी का नागरिक अभिनन्दन

संयोजक : आज हम इस शहर की विभूति को सम्मानित करने
एकत्र हैं।
हमारे बीच विराजे हैं बोतल शिरोमणि जी,
किन शब्दों में करूं इनका बखान !
हमारे शहर की चेतना का सर्वोच्च रूप हैं श्रीमान।
स्वस्थ विचारों के पोषक आप,
आपने ही मुक्ति और समानता दिलाने के लिए
आजीवन किया संघर्ष,
एक व्यक्ति किस तरह पूरा आंदोलन बन सकता है
आप हैं प्रमाण !
मैं यहां आपके और इनके बीच मूसलचंद नहीं बनते हुए
इतना-सा करूं निवेदन कि पूरे होशोहवास में हूं।
आचरण सहज और हरेक जरूरतमंद दोस्त की मदद,
स्पष्ट वचन और जीवन-शैली की निजी विशिष्टता,
मुखर सामाजिकता और स्त्रियों, पीड़ितों, दलितों की
तन-मन-धन से सहायता…कोई अंत नहीं
इनके गुणों का, कहेंगे, सूरज को दिखा रहा हूं दीपक
(इन्होंने सदा दिखाई बोतल)
निसन्देह, बोतल की गहराई और दूसरों के लिए
रीत जाने की उदारता शायद ही कहीं
किसी में मिले…

अध्यक्ष : समय बहुत नाजुक है
जाना दूर
मंजिल निश्चित नहीं

अनन्त समुद्र यात्रा !!

दोस्तो, जियो और जीने दो।
इक्कीसवीं की चौखट पर बैठा मैं
कभी-कभी सोचता हूं
आख़िर ईश्वर ने क्यों बनाया मनुष्य ?
और, क्या मनुष्य ने रोबॅट बनाकर
मुक्त नहीं कर दिया ईश्वर को ??

हम बहुत जल्दी ही कम्प्यूटर से मस्तिष्क में
भरे शब्द भण्डार को तौल लेंगे,
फेंक देंगे खाली डिब्बे समुद्र में,
मैं बहुत घूमा विदेश,
हमारा देश किसी बात में उनसे कम नहीं है।

पानी की टंकी के बारे में
शीघ्र ही कुछ होने जा रहा है,
आप स्पीड ब्रेकर चाहते हैं
लेकिन मैंने महसूस किया
कि होश में गाड़ी इतनी सही नहीं चलती।

दो शब्द और कहूंगा,
भ्रष्टाचार शहर से गांवों की तरफ जा रहा है
उसे जाने दीजिए।
मैं श्रीमान्‌जी का अत्यन्त आभारी हूं
और आप सबका भी,

मैं इस शहर की जागरूक जनता और आपका
अभिनन्दन करता हूं।

बोतल शिरोमणि :
अपने पैसे की पीते हैं
किसी की जेब नहीं काटते।
आज का गीदड़ कल हो जाता है शेर
हुच्च् !
अपन तो खरी बात करते
आप अगर चाहते
स्वागत हो हुच्च्
सिर्फ रस्मअदायगी नहीं
ठोस वोट मिलें
आने वाली पीढ़ियों तक के

तो
सस्ती कर दें
फिर क़सम से पूरे शहर को
पांच साल तक होश में आने दें
तो
हमारा सर क़लम कर देना हुच्च् !!...

टिड्डे और चींटियां

कैसा वक़्त आया है
बहरा ही बहरे को कहानी सुना रहा
अंधा अंधे का हाथ पकड़ दिखा रहा कला
कविता ने जिसे छोड़ दिया कभी का
कहानी में कविता को छेड़ रहा
सितार बजा रहा गिटार
बांसुरी क्लेरनेट में घुसकर चीख़ रही
भजन में ठुमरी ठुमक रही
कव्वाल ग़ज़ल पर अपना हाथ साफ़ कर रहा

कैसा वक़्त है कि मैं घड़ियां ख़राब करने वाले हाथ से
पूछ रहा क्या बजा है
नोट गिननेवाली अंगुलियों से कह रहा
बनाओ कोई अच्छा चित्र
फटे कैनवेस का कुर्ता पहिन इतरा रहा
लो देखो मैं भी हूं राजनीतिज्ञ
जेबों में भरे धूल और मुट्ठियों में पचनोल कह रहा
आओ हाज़मा ठीक कर लो
मेरी आंखों की खुराक है यह धूल

यूं तो हंस-हंसकर पच जाता है बहुत कुछ
फिर भी बड़े हाज़मे वाले लोग पसन्द करते हैं
कोई चमत्कारिक औषधि
छपे हुए शब्दों में से निकालते हैं रस
कंधे पर रखे दोस्ताना हाथ तोंद सटाते कहते हैं
भाई आजकल बहुत अवसाद हो रहा है

विदेश के पतझर जैसी उदासी घिर आयी है जीवन में

कैसा वक़्त आया है
कि लोग अपने नाखूनों में भी उदासी देख रहे
चैकबुकों से भरी दराज़ में भी अवसाद फैला
अदृश्य जाले की तरह

एक थे चिंतक, दार्शनिक, कवि
बीज को देखकर रोने लग जाते
अरे, इतनी लम्बी प्रतीक्षा फूटने की
इतनी दीर्घ यात्रा अभी तक ज्यों की त्यों !!

कैसा वक़्त है
फूल की पंखुड़ियों में वे अपनी पत्नियों की साड़ियां चुन रहे
कहीं न कहीं पांच सैकिंड में एक साड़ी चुनी जाती है
कहीं न कहीं रंगों को नचाया जाता है धुंध के सामने

कैसा वक़्त है
टिड्डे चींटियों का रूप धारण किये
बहुत परिश्रमी दीख रहे
और चींटियां सन्न हैं
कि सिर्फ़ गाना सोना खाना ही
सांस्कृतिक संवर्धन भये

फफूंद मलवा मछली

रुकी हुई है फफूंद
रास्ता होते हुए भी बढ़ती नही आगे
उलझी हुई सोच में
इतनी बड़ी गृहस्ती को कहां ले जाए।

नीचे मछली ऊपर आकाश
बीच में लटके डालियों के पाश
लेकिन वह नही चढ़ती ऊपर
नहीं डूबती नीचे।

तैरती मछली फिसलता आकाश
एक ही जगह जड़ होकर
सघन हो गया गृहस्ती का प्यार
देखती है दूब
क्या खूब !!
टपकी एक जोरदार बूंद
फिर भी हिली नहीं फफूंद।

लड़के वाला आया
लाखों मांगे
बोला, ज्यादा नहीं समझो भाग जागे
चुप पैंदे में भरे कीचड़
देखती है फफूंद
सागर माथा मलबे से दब गया
धसक गयी सुन्दर चोटी
बर्फ पिघलकर सड़कें रोके
चुप हो गयी वह रो धो के।

जब डगमग करता पानी आया
बहुत धीमी थी गति
धरती ने लगायी डुबकी शुद्ध किया
पर मलवा बहाव के विपरीत अड़ा रहा
उसने फफूंद से पूछा, तेरी कुड़मई हो गयी क्या ?
सीख गयी है तैरना तो डूबना भूल गयी क्या ?

"तू चिड़िया बनकर उड़ जा
तू फोड़ घड़ा और बह जा
तू तेज कटाव के डोंगे पर चढ़ जा

तू मेढ़क बनकर फुदक
सीपी की खुली सेंध में भर जा
तू तोड़ गृहस्थी के बंधन
कीचड़ कादे को चीर-फाड़
स्वच्छ हवा में निकल घूम
कुमुदनी को तरसा
तू चिड़िया बनकर उड़ जा।"

मछली सुन रही थी मलबे का गीत
फफूंद के बिस्तर के नीचे
मछली सुन रही थी
मच्छीमार की बाँसुरी यह
फफूंद खिड़की से झांक रही थी
किनारे रेत सांस रोके पड़ी थी

लेकिन फंसी थी फफूंद
चारों तरफ था ख़तरा
मलबा ही था उसका अपना ।

मछली दोनों को पीछे छोड़ चल दी
नांचती और अपने नांच की तारीफ़ करती
वह अगति पर गति की विजय थी ।

स्वर्गारोहण

एक पहाड़ मेरी नसों में उभरा हुआ
कांटों से छिला हुआ मेरा मांस
मेरी आंखों से टपकता हरा खून

अब जिन्दगी में एक पहाड़ हो तो है
बिल्कुल सीधा खड़ा चुनौती भरा
जिसकी ऊबड़खाबड़ मुस्कान
मुझे चिढ़ाती हुई

मेरे दिमाग़ की गर्म अंगीठी से लड़ती
यह ठंडी हवा पहाड़ की
पानी की तलाश में चल दिया हूं
जैसे एक सूखा नाला
मेरी गृहस्थी की सदियों से प्यासी झाड़ियां
और सदियों से आक्रामक
मेरी पेशानी पर अचरज का पसीना
कि इतने ऊंचे चढ़कर भी मैं तुच्छ
इतनी विचित्र साज सज्जा
फिर भी निस्संग
इतनी सारी भाषाओं के परस्पर गुम्फनों से घिरा
बिल्कुल निर्जन

थक गये हैं चढ़ते-चढ़ते मेरे पांव
मेरे हाथों की बूढ़ी उंगलियों की क़ैद से
निकल भागी है नदी
उसे पकड़ने झुकता हूं नीचे

अपनी कुबड़ी मानसिकता में निर्लज्ज
लेकिन कामातुर

मेरे ऊपर दौड़ेगी बिजली
मेरा मस्तक चूमने झुकेगा इन्द्र
रम्भा अभी सोयी है
मेरी छत पर

असंख्य सीढ़ियों से चढ़ते आ रहे हैं कवि
इन्द्र अभी झुका नहीं है
मेरे मस्तक को चूमेंगे कवि
रम्भा अभी सोयी है
सीढ़ियों से चढ़ते आ रहे है सभी जवान कवि···

पंजाब

कोई भी दीवार अब सुरक्षित नहीं है
फट पड़ेंगी छतें
हर कोने में अंधेरा हमला करने को तैयार है

आदमी ने पहचानी है मौत
वह दीवार से चिपका जा रहा है
लेकिन छत के ऊपर बैठी चील उड़ गयी है
देने खबर कि एक छिपे आदमी की हत्या हो गई है

× × ×

क्या हुआ दर्द में चीख़कर मरने का ?
तुमने चिथड़े उड़ा दिये रुखी खाल के
सुरक्षित सोचते रहे
निर्दोषों के मरने पर बोलेंगे संसद में तीन घंटे
कहेंगे सख्त कार्रवाई होनी चाहिए
जैसे भूनना गोलियों से

सख़्ती वरतती है सरकार
आदिवासियों पर
तालाब की मछलियों की बजाय सड़ती हैं लाशें
सख्त हिदायत दो
कि देखते ही गोली मार दी जाए

× × ×

तुमने भय से ढक लिया शहर
वह कहां होगी अब
तुमसे छिपती हुई अपनी दोस्त के साथ ?

गाड़ियों के धड़धड़ाते पहियों के नीचे
चूरा हुई एक लाश
कौन पहचानेगा इसे हटो हटो…

× × ×

तुम्हारी चीख़ की बदली हुई आवाज़
यमुना नदी पर उड़ती सारसी की तरह

प्रायोजित पृष्ठ

बच्चों के बारे में कुछ भी मत कहो, बच्चे हमें सभ्य
बनाते हैं। हम बच्चों से डरते हैं।
उनके लिए खरीदकर नही ले जा सके दुनिया, हम बच्चों से
छिपते हैं।
हम उनके सामने प्रेम नही करते, उनके सामने घृणा नहीं करते,
हम उन्हें दिखाते हैं अपनी निश्छलता।

बच्चे हमारे नाटक में प्रेक्षक होते हैं। हमारे सफल अभिनय पर
तालियां बजाते हैं, हमारे चूक जाने पर याद दिलाते हैं
आगे का पार्ट।
उनकी मौजूदगी में हम झगड़ा नहीं करते। बच्चों के सामने
हम कभी बच्चे नही होते।

बच्चे सिपाही हैं, हम चोर हैं। लेकिन जिस तरह सिपाही
चोरों के बिना बेचैन रहते हैं, बच्चे हमें पकड़कर ही खुश होते हैं
हम उन्हें दिखाई देते रहें जैसे सिपाही को चोर, गायब भी हों
तो उनके लिए कपड़े, मिठाई, खिलौने लाने।

बच्चों को कौन पैदा कर सकता है? अब कुछ समझदार बच्चे
कहने लगे हैं कि सरकार पैदा करती है बच्चे। सरकार
उनकी पढाई के लिए चिंतित है ताकि वे बड़े होकर मा, बाप की
चिंता कर सकें। इससे सरकार का काम आसान होता है।

बच्चे ने एक दिन मा से पूछा, आप सरकार से और बच्चे
क्यों नहीं लातीं, मेरा मन नही लगता।

बच्चे ने बत्तख़ के पेट में से बहुत-सी नन्ही बत्तख़ों को
निकलते देखा…ऊपर से दबाओ बड़ी बत्तख़ को और एक
प्यारी नन्ही बत्तख़ बाहर…
उसने दूसरे बच्चों से कहा, आओ, आज हम बच्चे पैदा करेंगे।
तुम लोग गुड्डू की पीठ दाबो, मैं उसके पांवों के
बीच से निकलूंगा।

बच्चे अपने समाज में सरकारी दखल से नाराज़ हैं।
वे खाट पर बैठे हमारे चेहरों को घूर रहे हैं…
हम कहीं सरकार के डर से उन्हें संसार में आने से
मना तो नहीं कर रहे है ??

मनोहरम्

[1]

घोड़ेवाले, तनिक रुकना
मैं जल्दी अपने गांव पहुंचना चाहती हूं
कहते हैं तलाव फिर भर गया है इस बार
सफ़ेद चिड़ियों के झुंड मेरे गांव को करते हैं तारीफ़

तेरे घोड़े की है निराली शान
औरत की ओढ़नी मुंह में दबाए दौड़ता है
चल, तेज चल
रास्ते में भाटिनों के चूड़े बज रहे हैं
लाल दिपदिपाता चेहरा
और कस कर गुंथा हुआ बोर
मेरे गांव के रास्ते पर कनेरों के गुच्छे झूल रहे हैं
चल और तेज चल

[2]

पटिया पर बैठा नाई
तेरे सिर में पार्क बना रहा है
बीच में गमला एक
दो तरफ चौबुर्जी

नाई बैठा पटेल की लड़की का क़िस्सा सुना रहा है
दोनों तरफ़ क़लमें बनी राजपूत सरदारों की
बार-बार देख खुश होता है तू

काम बिल्कुल टंच
तब ही पटेलन आकर उससे लड़ने लगी—
तू बाल बना, अपनी औक़ात देख
मेरी लड़की के बारे में कुछ कहा
तो पत्थर से फोड़ दूंगी सिर

सिर ही तो है जो बचाते हैं सब
जिसे सजाता है नाई
मुस्कराया वह और चुप हो गया
कई साल पहले पटेलन की कुहनी की वो ठेल
उसे याद हो आयी

[3]

नचकैया ठुमकता है
उसके दोस्त ताली देते हैं
चाय मिलेगी हम सबको
बाबू चलने दो कैसिट

उसके साथ नहीं नाचती लड़की
बहुत सुन्दर जो उसकी बहू
नाचता हुआ छोड़कर दौड़ जाती है आगे
जैसे एक कदम्ब महका हुआ चिढ़ाता महुए को

प्रकृति से करेंगे शृंगार पर लगेगी देर
बीन और ढप्प होंगे

इस बार बरखा में सिरकी के नीचे
वह गायेगा वह नाचेगी

बाबू, केमरा नहीं तुम्हारे पास
इसका फोटू निकलता शानदार

[4]

उसने दिए मुझे काले जामुन
मेरी तीती जलती जीभ से निकली सरस कविता
काला और रसभरा जामुनी प्यार
नीले कर गया ओंठ
एकरस नीला आकाश अस्फुट

बीन रहे हैं नंगधड़ंग बच्चे
अपनी-अपनी पोटली को देखकर खुश होते

पेड़ हो तो जामुन का
शीतल छाया और रस घोले
हवा की छेड़खानी में रूठे बोले
बोलते तो तोते भी हैं
पर वे रस पीकर तुतलाते है
बच्चों के शोर से कहीं दूर उड़ जाते हैं

[5]

बादल एक अच्छी ख़बर है

जब वह बरसा छत पर
बहुत से परायों ने देख लिया तुम्हें नहाते
सब तरफ फैली बात
छतें सिर ढकती हैं उनका
जो पहले से ही होते हैं शरीफ़
नहाती हैं छतें
जैसे कभी देखा ही नहीं हो बादल

मैंने बुलाया ठंडी हवा की ओट में
तब तुम हंस रही थी
पहिन लिए थे कपड़े गीले और बेशरम

[6]

इसका क्या करूं
जो है घास
मेरे पांवों में बिछती है और वे अपनी धुन के पक्के
किसी दंभी के दरवाज़े तक बढ़ते

दरवाज़े की ताक में
जहां अक्सर लोग चाभी छिपाते हैं
चिड़िया ढक रही है अपने अंडे
क्या वह समझती है
मनुष्य जाति की कठिनाइयां

घर की हर चीज दोनों के साथ-साथ रहने की
प्रतीक्षा में है

[7]

मेले में खोया वच्चा
हाय, कब मिलेगी मां
रास्ता भूल जाने पर ही घर का महत्त्व पता चलता है

पहले तो सारा ध्यान उसका
खिलौनों पर था
अब मां का चेहरा कौंध रहा है रोशनी में
झूले में बैठी वो औरत
मा तो नही है ?
वही हल्की नीली धोती में
ऊपर से नीचे आती-जाती मा।

रुको मा, रुको
झूले में तुम बैठी हो और सिर मेरा चकरा रहा है

[8]

आज भी ढोल बजा कल भी
आज भी था त्योहार और कल भी

पूछो, क्या है आज क्या था कल ?
भीख मांगने का त्योहार है सरकार
ढोल बजा
पूछो, हफ़्ते में एक दिन मनाने से काम नहीं चलता ?
ढोल तमतमाया : आप बड़े लोग

बापजी, हफ़्ते का खाना क्या एक ही दिन
खा लेते हो ?

क्यों इतनी बकवास करता है ?
हमारी जानकारी में आज कोई त्योहार नहीं है
गरजा ढोल : बापजी, क्यों खुलवाते हैं पोल
चीनी में लाखों के वारे-न्यारे हुए
शेयरों में पौबारह
चावल में चकाचक
हम तो आपकी खुशियों में गाते बजाते हैं
और आप हैं कि छिपकर जश्न मनाते हैं

आज भी ढोल बजा कल भी
आज भी था त्योहार और कल भी

जुझार नाथ

शायद कोई भी न ले वह नाम
मिट्टी में धंसा हुआ
घास फूंस में लिपटा
एक बेजान अर्थ को अपनी ध्वनियों में छिपाए
वह नाम तुम्हारे जिस्म के चारों ओर
लहर की तरह उठता गिरता
किसी मंद्र साज़ के परदों पर आवृत्तियां लेता

उसे भूलना सहज है
लेकिन पुकार कर चल देना असंभव है

उसने बनाया था बारीक सूत का एक चदरा
और गोबर से लिपे आंगन में फैला दिया
तुम बैठे और बजने लगा इकतारा
जिसे वक़्त बेवक़्त बजाकर मांगता था भीख
फिर एक दिन तुमने देखा कि वह
शहर में नालियां खोद रहा है
बिछा रहा है कोलतार
न जाने कहां रह गया था उसका इकतारा
तुमने नही सुनी उसके अचानक गायब हो जाने की कथा

× × ×

बहुत सारे कालबेलिए छोड़ चुके थे पठार
कभी वहां पानी था जैसे चेहरे के पास आईना
उनकी मुर्गियां, गधे, बकरियां सभी तो
झांकते थे पानी में

तब उनके साथ-साथ पानी भी चला गया
अपने अक्स छोड़ चटखी गार में
जिसे मलकर बाल खोले बैठी हैं गांव की औरतें

उन्होंने कुए खोदे चट्टानें काटीं
वे पानी की तलाश में उतर गए पाताल
जीवन को लाने इस पठार पर
जैसे अग्नि को लाये थे आकाश से

उनके पंच ने कहा—जब तलक कोई नाथ जुझार नहीं होगा
पठार इसी तरह प्यासा
जब तलक नयी समाधि पर रोयेंगी नहीं औरतें
पानी नहीं लौटायेगा सूरज

× × ×

वह मर गया है शहर में नाली खोदता
शायद उसके नाम से पा जाये रक़म उसकी औरत
जिसके साथ तीखी नफ़ीरी की तरह
गाती आ रही हैं दूसरी औरतें
अब फूटेगा पानी उसकी समाधि के पास
पंच कहता है अब सब कुछ ठीक होगा

× × ×

यह एक अल्पकालिक लड़ाई थी
जिसमें पठार का जुझार नाथ
शहर से छीन लाया पानी

फिर से हरे-भरे होंगे खेत
फिर से मुर्गियां पठार पर करेंगी सैर
शहर तक से आ रहे हैं लोग
जुझार नाथ के मेले में
जिसने पाताल से भेजा है यह पानी

सूखा : तीन जलस्मृतियाँ

एक

पिच्चू···तेरी गली के नल पर फोड़ती हूं घड़ा
दूर दूर तक पानी की खोज में
टूटी नालियों पर फोड़ती हूं अपनी किस्मत

तुझे गाली नहीं देती
बस पिच्चू···
बचे हुए शरीर के पानी में एक नफ़रतभरी यंत्रणा
मेरे खालीपन की···

o ▪ o o

बड़ी-बड़ी लड़ाइयां हमने नहीं लड़ीं,
जीते नहीं क़िले और उनमें छिपी स्त्रियां
सीताफलों के पीछे,
हमने नहीं भरा नामांकन किसी संसद में बैठकर
ऊंघने का,
हमने नहीं मंगाया तस्करी का सोना

हम तो बस पानी की कुछ बूंदों के लिए
चीखते रहे,
खोलते रहे पोल उनके जारज सम्बन्धों की
सिर्फ़ पानी के वास्ते···

दो

इस आदमी का दिल बहुत छोटा हो गया है

पानी पीने की बजाय
शाम के लिए उसे बचाकर रखता है

खोल दूं उसके लिए नहर
लेकिन खेत तो सब के सब बियाबान हैं
कहां-कहां भटकेगा पानी इंसान के लिए

o o o o

नदी की वक्र यात्रा में सोया तेरा गांव
धूल में लिपटा
सूरज की बड़ी लाल बिंदी माथे पर लगाए
उसे नदी व्यंग्य में कनखियों से देखती है —

जरा, शहर के लोगों से पूछ
वहां पानी की निर्जीव धारा को घेरे
लाखों लोग सुबह से बैठे हैं

तीन

किसी का भी शरीर नहीं छुआ बादलों ने
न आंधी में चढ़ी रेती ने
आकाश से तोड़कर गिराया कोई फल

मैंने अपने बेटे की हथेली पर
पिछले बरस रखा था एक ओला

बर्फ़ की बहुत बड़ी फैक्टरी का
कोई तो मालिक होगा
पूछा था उसने

हथेली पर इतनी सी देर में
पानी का एक कतरा रुका था
जैसे पुजारी ने उसे दिया हो चरणामृत

लेकिन हमने तो किसी की भी पूजा नहीं की थी
दूसरे लोग जब डर में
हाथ जोड़ रहे थे
तब हम खेल रहे थे
उस नन्हे ओले से

गोकुल

एक

क़िसी बहुत बड़े बाग़ में रहता था वह
नही प्रेत नहीं ब्रह्मराक्षस
कोयले के ठूंठ जैसा वह ठेंगना भील
खुरदरे थे हाथ-पांव
आंखें पीली गंदली
गमछा कमीज़ सब तार-तार
फिर भी प्रशंसा भरे अचरज में देखता था
नये डिजाइन के कपड़े
दूर धरती पर बैठा उकडूं
बैठा हो जैसे काला बिलाव
या फिर वही कोयले सा जला रुख
जिस पर बच्चों ने लगा दी हों टिमकनियां

मालिक पूछते
गोकुल, रखाली ठीक हो रही है न ?
चिमगादड़ें रात में तो नहीं करती नुकसान ?
आवारा मवेशी मुंह तो नहीं मारते कहीं ?
वह चिंतित आंखों को थोड़ा नीचे नवाकर कहता
और सब तो ठीक है मालिक
बस, इस बरखा से कुछ हो जाता बचाव
एक तिरपाल का टुकड़ा बस्स
आटा नोन बच जाता…

मालिक कहते
क्यों फिकर करता है ?
सब कुछ होगा, मकान एक पक्का बनवा देंगे
बरखा से पहले
ब्याह भी होगा
नोन क्या गुड़ तेल सब ही कुछ तो होगा
हा हा हा हा

० ० ० ०

झूठ नहीं बोले थे मालिक
एक पक्के मकान के आगे
तिरपाल से ढंकी मढ़ैया में
गोकुल की घराली देखती थी
टप टप बोलते जामुनियां के पातों के बीच
अपने कमेरा को

मस्त था वह
मालिक झूठ नही बोले थे
चिड़िया भी अगर एक फल खाले
इस नमक हरामी की मिले सजा
मैं नहीं अपने बाप का मूत
अगर चिड़िया भी एक फल खाले

० ० ० ०

घराली कहती सुस्ताले कमेरा
जनम भर की नौकरी में

कमाले इत्ता-सा पुन्न
चिड़ियाएं तो आयेंगी जायेंगी
आ आ इस मढ़ैयामें
टप-टप बोलें जामुनियां के पात,
पर गोकुल
वह कोयले के ठूंठ जैसा ठेंगना भील
मजाल है चिड़िया भी एक फल खाले…

○ ○ ○ ○

कभी-कभी तीज त्योहार पर
मालिक आते अपनी मित्र मंडली के साथ
गैस के हण्डों से जगमग होता सारा बाग
फेंटी जातीं ताशें
नोटों का लग जाता अम्बार
बोतल पर बोतल खुलती
जैसे काउन्टर पर काउन्टर
ब्लाइंड पर ब्लाइंड बैठे
तकते गोकुल की घराली
और दौड़-दौड़कर गोकुल करता मनुहार
नमकीन सिगरेट पान…
मालिक कहते सावधान
ट्रेल ट्रेल ट्रेल हा हा हा…

○ ○ ○ ○

ले गोकुल, तू भी ले
चख गोकुल, चख

फ्रांस की ख़ालिस अंगूरी
चढ़े तो बस नींद गहरी
ले गोकुल, तू भी ले
और ले और'' और'''हा हा हा हा

॰ ॰ ॰ ॰

बलमा तुम तो सोये धुत्त
मेरी कैसे कटेगी रात
दारूड़ी का पीना छोड़ो जी
मालिक जी के साथ
मेरी कैसे कटेगी रात

॰ ॰ ॰ ॰

ओ री मृगनैनी, हम मालिक
हमारे हज़ारों हाथ
तेरे नाम करें यह बाग़
तेरे नाम करें बावड़ी जामुनड़ी
निम्बुआ और बेलड़ी'''
बलमा तो सोये धुत्त
मेरी कैसे कटेगी रात

॰ ॰ ॰ ॰

पृथ्वी पर घास उगती रही
घास कटती रही
जुआ चलता रहा
जुआ ढुलता रहा

जीत होती रही
हार होती रही
गोकुल हंसता रहा
घराली रोती रही
गोकुल सोता रहा
घराली जगती रही
घास उगती रही
घास कटती रही

दो

एक रात की बात
किसी को भी नहीं मालूम
सिर्फ़ जानूं मैं या जानें वे पांच
न जाने पुलिस ?
जाने पर कहे नहीं
जाने गोकुल पर मालिक को देखे
और चुप्प
जाने घराली पर रोवे
टप टप जामुनियां के पात टप्प···टप्प ··

उस रात की बात
सुनार की किस्मत ज़ोर मार रही थी
तीन हज़ार से आगे था वह
सबके छक्के छूट रहे थे

इक्के बादशे लुढ़क रहे थे
ठेकेदार मिलावट का माहिर
मालिक जी को टटोल रहा था
सब के चेहरों पर बदला लेने का फण डोल रहा था…
सुनार का नशा बढ़ रहा था
बाक़ी का नशा उतर रहा था
सुनार जाम भर रहा था
मालिक जी का ताश
ठेकेदार बदल रहा था

भड़क उठा सुनार
गढ़ाई में मिलावट देख ली उसने
पुकारने लगा बेईमान है सरासर धोखाधड़ी है !!

मालिक बोले
बिना सबूत किसे कह रहा है बेईमान ?
अगर कोई भी एक कहदे ऐसा हुआ
तो जीवन भर कसम ललूं ताश से हुं हुं हुं ··

० ० ० ०

झूठ नहीं बोले थे मालिक
सब बोले हमने नहीं देखा
ऐसा नहीं हुआ
बस एक सुनार जिसने देखा था
दूध का दूध पानी का पानी

चीख़ने लगा बेईमान हो तुम सब के सब
मिलकर खेलते हो···थू थू···

धावाई कटे
अबे सुनारया तेरी इतनी हिम्मत
मूंछों के बल नहीं देखे क्या
भूल गया अपनी औक़ात
खींचली गुप्ती मसनद के नीचे से
भोंक दी पेट में उसके
थू थू थू

सुनार की बिखर गयीं सब लड़ियां
पेट का ख़ून
पान के बादशाह पर फिर गया

° ° ° °

गोकुल
वह कोयले के ठूठ जैसा ठेंगना भील
कहता रहा
मालिक, बहुत बुरा हुआ बहुत बुरा हुआ···

तीन

मालिक कहते
गोकुल, यहां भी कौन-सा आराम था तुझे

वहां
बहुत बड़ा कमरा होगा
दस-पन्दरह बरस बाद
तू अपने गांव में वापिस लौट आयेगा
घराली के नाम
बैंक में डाल दिये हैं पांच हजार
तू मत कर कुछ सोच विचार

मालिक कहते
हमें क्या करना है इस दौलत का —
गोकुल, यह सब तेरी ही तो है
हम जानते हैं सुनार को तूने नहीं मारा
वह तो वैसे भी मरता ही
अनहोनी को कौन टाल सकता है
वह हमारा दोस्त था
और तू परम प्रिय सेवक
इस जनम के पुन्न ही
अगले जनम में काम आयेंगे
हमें क्या करना है इस दौलत का...

o o o o

नहीं प्रेत नहीं ब्रह्मराक्षस
कोयले के ठूंठ जैसा वह ठेंगना भील
जिसके
इस जनम के पुन्न ही
अगले जनम में काम आयेंगे।

□□